क्या परमेश्वर आपसे प्रेम करता है ?

प्र. 1 – कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि क्या परमेश्वर मुझ से प्रेम करता है ? यदि वह प्रेमी परमेश्वर है तो जगत में इतनी यातनाएँ और दु:ख क्यों हैं ?
उ. 1 – बाईबल कहलाने वाली अपनी पुस्तक में, परमेश्वर समझाता है कि सभी यातनाओं और दु:खों का कारण हमारे पाप ही हैं। यह सत्य है कि परमेश्वर अपना प्रेम समग्र जगत के लिये प्रगट करता है, जैसे हम बाईबल में सर्वाधिक रूप से उद्धृत किये गये वचन में पढ़ते हैं :
क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।
यूहन्ना 3:16

यद्यपि परमेश्वर के पास कहने को बहुत कुछ है :
दुष्ट के चालचलन से यहोवा को घृणा आती है, परन्तु जो धर्म का पीछा करता उस से वह प्रेम रखता है।
नीतिवचन 15:9

क्योंकि यहोवा धर्मियों का मार्ग जानता है, परन्तु दुष्टों का मार्ग नष्ट हो जाएगा।
भजनसंहिता 1:6

प्र. 2 – परन्तु मैं दुष्ट नहीं हूँ। मैं एक सदाचारी, शिष्ट व्यक्ति हूँ। निश्चय ही, मैंने अपने जीवन में जो अच्छे कार्य किए हैं, वे मेरे बुरे कार्यों से कहीं अधिक मूल्यवान हैं। ये वचन किस प्रकार मुझ पर लागू हो सकते हैं ?
उ. 2 – परमेश्वर की धार्मिकता के मापदंड के अनुसार सर्वाधिक धर्मी व्यक्ति को भी परमेश्वर नरक के मार्ग पर जा रहे पापी के रूप में देखता है। बाईबल सिखाती भी है कि कोई भी इतना अच्छा नहीं कि स्वयं स्वर्ग में जा सके। इसके विपरीत हम सभी पापी हैं, और हम सभी परमेश्वर के समक्ष अपराधी हैं।

जैसा लिखा है : कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं, कोई समझदार नहीं, कोई परमेश्वर का खोजने वाला नहीं।
रोमियों 3:10-11

मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला होता है, उसमें असाध्य रोग लगा है, उसका भेद

कौन समझ सकता है ?
यिर्मयाह 17:9

ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक देख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।
नीतिवचन 14:12

प्र. 3 – यदि मैं परमेश्वर की दृष्टि में इतना दुष्ट व्यक्ति हूँ, तो परमेश्वर मेरे साथ क्या करेगा ?
उ. 3 – बाईबल सिखाती है कि जगत के अन्त समय में सभी दुष्ट इस पृथ्वी पर नरक नामक जगह में परमेश्वर के अनन्त दण्ड के अधीन होंगे और यह समय अति निकट है। बाईबल आधारित बहुत से प्रमाण हैं कि विश्वासियों को उठा लिये जाने की घटना 21 मई, 2011 को होगी और 21 अक्टूबर, 2011 को इस जगत का अस्तित्व मिट जायेगा। कृपया निःशुल्क पुस्तकों, 'समय का अंत है' एवं 'हम लगभग वहीं हैं' के लिये फेमिली रेडियो से संपर्क करें, जो जगत के अन्त के समय-पत्रक एवं न्याय संबंधी बहुत सारे बाईबाल आधारित प्रमाण उपलब्ध कराती है।

क्योंकि मेरे कोप की आग भड़क उठी है, जो पाताल की तह तक जलती जाएगी, और पृथ्वी अपनी उपज समेत भस्म हो जाएगी, और पहाड़ों की नीवों में भी आग लगा देगी। मैं उन पर विपत्ति पर विपत्ति भेजूँगा; और उन पर मैं अपने सब तीरों को छोड़ूँगा। वे भूख से दुबले हो जाएँगे, और अंगारों से और कठिन महारोगों से ग्रसित हो जाएँगे; और मैं उन पर पशुओं के दाँत लगवाऊँगा, और धूलि पर रेंगनेवाले सर्पों का विष छोड़ दूँगा।
व्यवस्थाविवरण 32:22-24

जो आज्ञा को मानता है, वह जोखिम से बचेगा, और बुद्धिमान का मन समय और न्याय का भेद जानता है। क्योंकि हर एक विषय का समय और नियम होता है, यद्यपि मनुष्य का दुःख उसके लिये बहुत भारी होता है।
सभोपदेशक 8:5-6

प्र. 4 – ओह, बस भी करें! निश्चय ही परिस्थिति इतनी बुरी नहीं है। वास्तव में परमेश्वर के कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि वह मनुष्य को नष्ट कर देगा और पृथ्वी को जला देगा, क्या वह है ?
उ. 4 – सचमुच, परमेश्वर के कहने का तात्पर्य यही है कि जीवित रहने का वह भयंकर समय होगा जब वह इस पृथ्वी को पाँच महीनों के लिये शब्दशः नरक बना देगा। फिर परमेश्वर इस पृथ्वी और उसमें जो कुछ निहित है उसे आग से नष्ट कर देगा।

उन्हें लोगों को मार डालने का तो नहीं पर पाँच महीने तक पीड़ा देने का अधिकार दिया गया : और उनकी पीड़ा ऐसी थी जैसे बिच्छू के डंक मारने से मनुष्य को होती है।
प्रकाशित वाक्य 9:5

परन्तु प्रभु का दिन चोर के समान आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएँगे और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएँगे।
2 पतरस 3:10

और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।
प्रकाशित वाक्य 20:15

जगत के अन्त में ऐसा ही होगा। स्वर्गदूत आकर दुष्टों को धर्मियों से अलग करेंगे, और उन्हें आग के कुण्ड में डालेंगे। जहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।
मत्ती 13:49-50

...उस समय जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा, और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएँगे।
2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9

प्र. 5 - वह भयंकर है! क्यों परमेश्वर मनुष्य को नष्ट करेगा ?
उ. 5 - क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य की उत्पत्ति उसके कार्यों के लिये परमेश्वर के प्रति जिज़्मेदार रहने के लिये की थी। परमेश्वर का संपूर्ण न्याय पाप के भुगतान की माँग करता है।

इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं;
रोमियों 3:23

क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है।
रोमियों 6:23

प्र. 6 – कितना भयंकर है ? क्या बाईबल कोई आशा प्रदान करती है जिसके द्वारा व्यक्ति विनाश से बच सके ?
उ. 6 – सचमुच वह करती है; ऐसे किसी का अस्तित्व है जो हमारे पापों के लिये प्रचंड एवं निर्लज्जतापूर्ण विनाश की सजा को सहन करने के लिये स्थानापन्न है। वह कोई और नहीं बल्कि स्वयं परमेश्वर ही है, जो पृथ्वी पर यीशु ख्रीस्त के रूप में उन सभी के लिये परमेश्वर के क्रोध को सहन करने आया था जिनके उद्धार के लिये वह आया।

हम तो सब भेड़ों की नाई भटक गये थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।
यशायाह 53:6

परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ।
यशायाह 53:5

इसी कारण मैं ने सब से पहले तुझें वही बात पहुँचा दी, जो मुझे पहुँची थी कि पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु ख्रीस्त हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया, और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।
1 कुरिन्थियों 15:3–4

जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।
2 कुरिन्थियों 5:21

प्र. 7 – तो क्या आप यह कह रहे हैं कि यदि ख्रीस्त मेरा स्थानापन्न है, जो मेरे पापों के लिये दंडित हुआ, तो मुझे कभी भी नष्ट किये जाने के विषय में चिंता नहीं करनी पड़ेगी।
उ. 7 – हाँ, यह ऐसा ही है! यदि मेरा उद्धार हो चुका है, तो ख्रीस्त ने मेरे स्थानापन्न के रूप में मेरे पापों का दण्ड चुका दिया है।

जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन

को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।
यूहन्ना 3:36

प्र. 8 – परन्तु उस पर विश्वास करने का तात्पर्य क्या है ? यदि मैं ख्रीस्त के उद्धारकर्ता होने के विषय में बाईबल जो कहती है उनसे सहमत हो जाऊँ, तो क्या मैं सदासर्वदा के लिये नष्ट हो जाने से बच जाऊँगा ?
उ. 8 – ख्रीस्त में विश्वास रखने का अर्थ बाईबल के सत्यों के साथ मेरे मन में सहमत होने से कहीं अधिक है। इसका अर्थ है कि मैं संपूर्ण बाईबल की अपने लिये परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक के रूप में विश्वास रखता हूँ। इसका यह भी अर्थ है कि मुझ में बाईबल की सभी आज्ञाओं का सतत पालन करने की तीव्र अभिलाषा निहित है। इस प्रकार, मुझे तब लगता है कि मैं सचमुच प्रसन्न हूँ और मैं वैसे ही जीता हूँ जैसे बाईबल में परमेश्वर मुझे सूचित करता है।

यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानेंगे, तो इस से हम जान लेंगे कि हम उसे जान गए हैं।
1 यूहन्ना 2:3

कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा, तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।
मत्ती 6:24

प्र. 9 – क्या आप यह कह रहे हैं कि यीशु के अलावा विनाश से बचने का अन्य कोई मार्ग नहीं है ? अन्य धर्मों का क्या होगा ? क्या उनके अनुयायी भी नष्ट कर दिये जाएँगे ?
उ. 9 – हाँ, अवश्य ही। वे इस वास्तविकता से बच नहीं सकते कि परमेश्वर हमारे पापों के लिये हमें ही जिम्मेदार ठहराता है। परमेश्वर की माँग है कि हम हमारे पापों का मूल्य चुकाएँ। अन्य धर्म, जिनमें ख्रीस्त के नाम का उपयोग करने वाले कइयों का समावेश है, अपने अनुयायियों के पापों का वहन करने के लिये स्थानापन्न उपलब्ध नहीं करवा सकते। ख्रीस्त ही अकेला है जो हमारे दोष एवं लज्जा को सहन करने और हमारा उद्धार करने में सक्षम है। इसलिए व्यक्ति को अपना धर्म त्याग कर केवल बाईबल पर ही विश्वास करना चाहिए।

क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में एक ही बिचवई है, अर्थात् यीशु ख्रीस्त जो मनुष्य है।
1 तीमुथियुस 2:5

और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें।
प्रेरितों के काम 4:12

यीशु ने उससे कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।
यूहन्ना 14:6

प्र. 10 – अब मैं निराश हो गया हूँ। मैं नहीं चाहता कि मैं नष्ट कर दिया जाऊँ। मैं उद्धार पाने के लिये क्या कर सकता हूँ ?
उ. 10 – आप अपने उद्धार के लिये कुछ भी नहीं कर सकते। बाईबल हमें कहती है कि केवल परमेश्वर ही आपका उद्धार कर सकता है। परमेश्वर ने जिनके लिये उसके उद्धार की योजना बना ली है उनके हृदयों एवं जीवन में परमेश्वर के वचन (बाईबल) लागू कर उद्धार का बहुत बड़ा चमत्कार करता है। उद्धार प्राप्त व्यक्ति के जीवन में उद्धार के इस चमत्कार का प्रभाव यह है कि अब उसे परमेश्वर और बाईबल से प्रेम है। तब वह अति प्रसन्न है जब वह परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक, बाईबल का अनुसरण करता है। इस प्रकार यदि व्यक्ति सचमुच में उद्धार पाने की इच्छा रखता है तो उसे ध्यानपूर्वक बाईबल पढ़ने अथवा सुनने में समय व्यतीत करना चाहिये।

सो विश्वास सुनने से, और सुनना ख्रीस्त के वचन से होता है।
रोमियों 10:17

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है।
इफिसियों 2:8

और लुदिया नाम थुआथीरा नगर की बैंजनी कपड़ेवाली एक भक्त स्त्री सुनती थी, और प्रभु ने उस का मन खोला, ताकि पौलुस की बातों पर चित्त लगाए।
प्रेरितों के काम 16:14

प्र. 11 – आप बाईबल का ही संदर्भ देते रहते हैं। सो यह बाईबल कितनी महत्वपूर्ण है ?
उ. 11 – बाईबल जगत में सर्वाधिक महत्वपूर्ण पुस्तक है क्योंकि वह मनुष्य जाति के लिये

परमेश्वर के नियम की पुस्तक है। बाईबल पढ़ने या सुनने से व्यक्ति ऐसे स्थान में होता है जहाँ परमेश्वर उसका उद्धार कर सकता है यदि उस व्यक्ति के लिये परमेश्वर की वही इच्छा है। इसके अतिरिक्त वह परमेश्वर, उसके क्रोध और उसकी उद्धार योजना के विषय में बहुत से अद्‌भुत और विस्मयकारी सत्य भी जान सकेगा। प्रभावपूर्ण रूप से वह परमेश्वर की वाणी सुन रहा है क्योंकि परमेश्वर बाईबल का लेखक है और इसलिये उसके वचनों (बाईबल) के द्वारा उससे बात कर रहा है।

यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है; यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं, साधारण लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं।
भजनसंहिता 19:7

क्या ही धन्य हैं वे जो चाल के खरे हैं, और यहोवा की व्यवस्था पर चलते हैं।
भजनसंहिता 119:1

अत: विश्वास सुनने से और सुनना परमेश्वर के वचन से होता है।
रोमियों 10:17

धन्य है वह जो इस भविष्यद्वाणी के वचन को पढ़ता है, और वे जो सुनते हैं और इसमें लिखी हुई बातों को मानते हैं; क्योंकि समय निकट है।
प्रकाशितवाक्य 1:3

प्र. 12 – क्या मैं प्रार्थना कर सकता हूँ कि परमेश्वर कदाचित दया दिखाए और मेरा उद्धार करे?

उ. 12 – जी हाँ, अवश्य ही। परमेश्वर अत्यन्त ही दयालु है। इसलिए, बाईबल हम से कहती है हम प्रार्थना कर सकते हैं और हमें गिड़गिड़ा कर और दया की भीख माँग कर अपने उद्धार के लिये प्रार्थना करनी चाहिये, यह स्वीकार करते हुए कि हम पापी हैं और परमेश्वर के क्रोध के योग्य हैं। इससे हमारा उद्धार नहीं होगा, परन्तु हमारे पास एक आश्वासन होगा कि परमेश्वर हमारी उद्धार पाने की तीव्र इच्छा को जानता है।

परन्तु चुंगी लेने वाले ने दूर खड़े होकर, स्वर्ग की ओर आँखें उठाना भी न चाहा, वरन् अपनी छाती पीट-पीट कर कहा, हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर।
लूका 18:13

प्र. 13 – क्या मुझे कलीसिया में उपस्थित रहना चाहिए ?
उ. 13 – निश्चित रूप से नहीं। बाईबल हमें कहती है कि यीशु के क्रूस पर की मृत्यु के लगभग 2000 वर्ष बाद तक वे जो यीशु में विश्वास रखते हैं, यदि संभव हो, तो उन्हें कलीसिया का सदस्य होना चाहिये। परन्तु अब हमें बाईबल से पता चलता है कि अब परमेश्वर कलीसियाओं की सेवा के माध्यम से लोगों का उद्धार नहीं कर रहा है। कलीसियाई युग समाप्त हो चुका है।
वास्तविकता यह है कि परमेश्वर अपनी व्यवस्था की पुस्तक, बाईबल में आदेश देता है कि सच्चे विश्वासियों को अपनी कलीसियाओं को त्याग देना है। यह इसलिये कि परमेश्वर का धार्मिक न्याय सभी स्थानीय सभाओं पर है, जैसा कि परमेश्वर न्याय के दिन के लिये जगत को तैयार कर रहा है।

सो जब तुम उस उजाड़नेवाली घृणित वस्तु को जिस की चर्चा दानिय्येल भविष्यद्वक्ता के द्वारा हुई थी, पवित्र स्थान में खड़ी हुई देखो, जो पढ़े वह समझे। तब जो यहूदिया में [स्थानीय मंडलियाँ] हों वे पहाड़ों पर [ख्रीस्त के पास] भाग जाएँ।
मत्ती 24:15–16

क्योंकि वह समय आ पहुँचा है, कि पहिले परमेश्वर के लोगों का न्याय किया जाए [स्थानीय मंडलियाँ], और जबकि न्याय का आरंभ हम ही से होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते ?
1 पतरस 4:17

हमें स्मरण रखना चाहिए कि हमारा उद्धार एक कलीसिया द्वारा या एक पासबान द्वारा या एक याजक द्वारा, अथवा जल से बपतिस्मा द्वारा अथवा सहभागी सेवाओं द्वारा नहीं हो सकता। केवल प्रभु यीशु ख्रीस्त जो स्वयं परमेश्वर है हमारा उद्धार कर सकता है। बाईबल सिखाती है कि इस वर्तमान समय में, जब हम समय के अन्त के बिलकुल निकट हैं, कलीसियाओं के बाहर ही परमेश्वर बड़ी संज़्या में लोगों का उद्धार कर रहा है।

इसके बाद मैंने दृष्टि की, और देखो, हर एक जाति और कुल और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था, श्वेत वस्त्र पहिने और अपने हाथों में खजूर की डालियाँ लिए हुए सिहांसन के सामने और मेम़्ने के सामने खड़ी है।
प्रकाशितवाक्य 7:9

फेमिली रेडियो से आप नि:शुल्क एवं किसी भी उपकार के बगैर 'कलीसियाई युग का अंत और उसके बाद' और 'गेहूँ और कड़वे दाने' पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं। ये बाईबाल आधारित ढेर सारी जानकारी उपलब्ध कराती है जो हमें निर्दिष्ट करती है कि हम कलीसियाई युग के अन्त समय पर आ चुके हैं।

प्र. 14 – कृपया मुझे और भी बताएँ कि परमेश्वर लोगों का उद्धार किस प्रकार करता है।

उ. 14 – यूहन्ना 11 में बाईबल यह दर्शाते हुए एक उत्कृष्ट उदाहरण देती है कि हमारे उद्धार का समग्र कार्य परमेश्वर अकेला ही करता है। लाजर नामक एक व्यक्ति जो चार दिनों से मृत स्थिति में था उसे ख़्रीस्त पुनर्जीवित करता है। यीशु लाजर की कब्र के बाहर खड़े हो कर उसे आदेश दिया, 'लाजर निकल आ।' स्वाभाविक रूप से, कब्र में रखा दुर्गंधयुक्त शव उसे सुन नहीं सकता था अथवा उसके आदेश का पालन नहीं कर सकता था।

बावजूद इसके कि लाजर ने यीशु का आदेश सुना और एक जीवित व्यक्ति के रूप में, कब्र से बाहर निकला। यह कैसे संभव हुआ? इसका यह अर्थ था कि जब यीशु ने मृत लाजर को बाहर निकलने का आदेश दिया, यीशु को उसके आत्मिक स्वरूप में उस कब्र में प्रवेश करना पड़ा और उस दुर्गन्धयुक्त शव को भौतिक जीवन, सुनने के लिये कान, और ख़्रीस्त के आदेश का पालन करने की इच्छा शक्ति और ताकत प्रदान करनी पड़ी।

बाईबल हमसे कहती है कि हम हमारे उद्धार से पूर्व आत्मिक रूप से मृत हैं। इसके बावजूद परमेश्वर हमें, परमेश्वर को खोजने, विश्वास रखने, पछतावा करने का आदेश देता है। यद्यपि, जिस प्रकार उस मृत लाजर के लिये कब्र से बाहर निकलने के यीशु के आदेश का पालन करना असंभव था, उसी प्रकार आत्मिक रूप से मृत व्यक्ति के लिये, उद्धार हेतु यीशु में विश्वास रखने के परमेश्वर के आदेश का पालन करना असंभव है।

कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिस ने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले, और मैं उस को अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँगा।

यूहन्ना 6:44

जिस प्रकार वे जिनके उद्धार की परमेश्वर योजना बनाता है, जैसे वह हमें विश्वास रखने, पछतावा करने, उद्धार प्राप्त करने की आज्ञा देता है, उसी प्रकार वह आत्मिक शवों के साथ बात कर रहा है जो स्वयं कभी उद्धार प्राप्त नहीं कर सकते। फिर भी कुछ ऐसे हैं जो उद्धारकर्त्ता के रूप में यीशु में विश्वास रखना प्रारंभ करते हैं, जिन्हें पता चलता है कि जब वे परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप बर्ताव करते हैं तब उन्हें सर्वाधिक प्रसन्नता होती है। इसका प्रमाण उनके जीवन में यह है कि किसी प्रकार से उनका उद्धार हो चुका है। यह केवल इसलिये हो सकता है क्योंकि जिस प्रकार

परमेश्वर ने उन्हें विश्वास रखने की आज्ञा प्रदान की, परमेश्वर ने उनके जीवन में प्रवेश भी किया और उनका उद्धार किया। चूँकि उसने उनका उद्धार किया वे यह जान सके कि वे यीशु में विश्वास करने लगे थे। उन्होंने जाना कि उनके लिये अब पाप आनंददायक नहीं रह गया है। यह सुस्पष्ट था कि परमेश्वर ने उन्हें उद्धार के लिये चुना था। जब उन्होंने सुसमाचार सुना, परमेश्वर ने, परमेश्वर के वचन को उनके जीवन में लागू किया और उनका उद्धार हो गया।
यदि आपका उद्धार नहीं हुआ है तो बाईबल को निष्ठापूर्वक सुनें। ध्यानपूर्वक और प्रार्थनामय होकर बाईबाल का सतत पठन करें। संभव है कि आप भी उद्धार प्राप्त करेंगे, क्योंकि परमेश्वर अपनी नियम पुस्तक, बाईबल के माध्यम से आपको बुलाता है।

हे पृथ्वी के सब नम्र लोगों, हे यहोवा के नियम के माननेवालों, उसको ढूँढ़ते रहो; धर्म को ढूँढ़ों, नम्रता को ढूँढ़ो; सज़्भव है तुम यहोवा के क्रोध के दिन में शरण पाओ।
सपन्याह 2:3

कोई बात नहीं यदि आप बहुत बुरे ढँग से जिएँ हों अथवा आपने कितने ही भयंकर रूप से पाप किए हों, यह सर्वथा संभव है कि परमेश्वर की दया के द्वारा, आप भी, उद्धार के लिये परमेश्वर के द्वारा चुन लिये गये हैं।

यद्यपि, स्मरण रखें, कि परमेश्वर सबकुछ अपने समय अनुसार करता है। इसलिए, जबकि आप बाईबल से लगातार सीखना जारी रखें, आपको बड़े धैर्य के साथ यहोवा की बाट जोहनी चाहिये।

यहोवा से उद्धार पाने की आशा रखकर चुपचाप रहना भला है।
विलापगीत 3:26

मेरा उद्धार और मेरी महिमा का आधार परमेश्वर है; मेरी दृढ़ चट्टान, और मेरा शरणस्थान परमेश्वर है। हे लोगो, हर समय उस पर भरोसा रखो, उस से अपने-अपने मन की बातें खोलकर कहो; परमेश्वर हमारा शरणस्थान है।
भजनसंहिता 62:7-8

कदाचित् परमेश्वर आप पर दया करें और अपने अंतिम विनाश से आपको बचाएँ।

हमारे सुसमाचार प्रसारण की नि:शुल्क कार्यक्रम मार्गदर्शिका, हमारे नि:शुल्क बाईबल स्कूल पत्राचार पाठ्यक्रमों के विषय में जानकारी, अथवा नि:शुल्क पुस्तकों व साहित्य प्राप्त करने के लिये कृपया इस पते पर लिखें :

Family Radio, Oakland, CA 94621 USA
E-mail:International@familyradio.com
On the Internet: **http://www.familyradio.com**

फेमिली रेडियो किसी कलीसिया से न जुड़कर बाईबल आधारित मसीही प्रसारण सेवा संस्था है।